गोरख पांडेय की कविताएं

पैसे का गीत

पैसे की बाँहें हज़ार अजी पैसे की
महिमा है अपरम्पार अजी पैसे की
पैसे में सब गुण
पैसा है निगुर्ण
उल्लू पर देवी सवार अजी पैसे की
पैसे के पण्डे
पैसे के झण्डे
डंडे से टिकी सरकार अजी पैसे की
पैसे के गाने
पैसे की ग़ज़लें
सबसे मीठी झनकार अजी पैसे की
पैसे की अम्मा
पैसे के बप्पा
लपटों से बुनी ससुराल अजी पैसे की
मेहनत से जिंसें
जिंसों के दुखड़े
दुखड़ों से आती बहार अजी पैसे की
सोने के लड्डू
चांदी की रोटी
बढ़ जाए भूख हर बार अजी पैसे की
पैसे की लूटें
लूटों की फ़ौज़ें
दुनिया है घायल शिकार अजी पैसे की
पैसे के बूते
इंसाफ़ी जूते
खाए जा पंचों! मार अजी पैसे की

समय का पहिया

समय का पहिया चले रे साथी
समय का पहिया चले!
फ़ौलादी घोड़ों की गति से आग़ बर्फ़ में जले रे साथी!
समय का पहिया चले!
रात और दिन पल-पल छिन-छिन आगे बढ़ता जाए!
तोड़ पुराना नए सिरे से सब-कुछ गढ़ता जाए,
पर्वत-पर्वत धारा फूटे लोहा मोम-सा गले रे साथी!
समय का पहिया चले!
धरती डोले, सूरज डोले, डोलें चांद सितारे
डोलें गढ़ औ क़िले दमन के, डोलें शासक सारे,
तुफ़ानों के बीच अमर जीवन का अंकुर पले रे साथी!
समय का पहिया चले!
उठा आदमी जब जंगल में अपना सीना ताने
रफ़्तारों को मुट्ठी में कर पहिया लगा घुमाने,
मेहनत के हाथों से आज़ादी की सड़कें ढलें रे साथी!
समय का पहिया चले!

माननीय पर्यावरण मंत्री का सामान्य ज्ञान

महाराष्ट्र के विदर्भ में बीटी कपास के पौधों को खाने से कई पशुओं की मौत हो गयी। जिन मिलों में कपास के शोधन का कार्य हुआ, वहां मज़दूरों को सांस सम्बन्धी बीमारियां और त्वचा की एलर्जी हो गयी।

हाल ही में मोदी सरकार ने 12 जीएम फ़सलों के प्रायोगिक परीक्षण को मंजूरी दे दी। अनुवांशिक रूप से संशोधित जीएम फसलों के प्रभाव से सम्बन्धित एक सवाल का लिखित जवाब देते हुए केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने 4 दिसम्बर को राज्यसभा में कहा कि इस बात का कोई वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं है कि अनुवांशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलें भूमि, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को नुकसान पहुंचायेंगी। उनका कहना था कि जीएम फसलों में कीटरोधक सहित कई लाभकारी विशेषताएं हैं जो खाद्य सुरक्षा में सहायक हो सकती हैं।

बीटी बीज एक जीवाणु-वैसिलस थ्यूरिंजिनेसिस से तैयार किया जाता है जो कि बहुत ही जहरीला है। इससे इन बीजों में भी जहरीलापन आ जाता है। अमरीका में जीएम टमाटर लगाये जाने के बाद वहां बीमारियों में बहुत ज्यादा बढोत्तरी हुई। एलर्जी के मामलों में 400 फीसदी, अस्थमा में 300 फीसदी तथा आटिज्म 1500 फीसदी का इजाफ़ा पाया गया। कनाडा के एक अध्ययन में पता चला है कि 93 फ़ीसदी भ्रुण में बीटी से सम्बन्धित कीटनाशक पाये गये।

महाराष्ट्र के विदर्भ में बीटी कपास के पौधों को खाने से कई पशुओं की मौत हो गयी। जिन मिलों में कपास के शोधन का कार्य हुआ, वहां मज़दूरों को सांस सम्बन्धी बीमारियां और त्वचा की एलर्जी हो गयी।

जहां तक उपज में बढोत्तरी की बात है तो अमरीकी संस्था आईएएसटीडी, जिसमें भारत सहित अन्य देशों के 400 वैज्ञानिक शामिल हैं। इसने चार वर्षों के शोध के बाद अपनी रिपोर्ट में कहा कि बीटी बीजों का उपज बढाने से कोई लेना-देना नहीं है। इससे केवल कीड़ों से फसल का बचाव हो सकता है इससे नुकसान थोड़ा कम हो सकता है, लेकिन पक्के तौर पर यह कहना भी मुश्किल है कि कीड़ों से फसल का बचाव होगा भी या नहीं।

अमरीका में सबसे पहले 1994 में जीएम टमाटर लगाया गया था। इसके बीस साल बाद भी वहां ऐसी कोई जीएम फसल नहीं है जिसमें पैदावार बढी हो। अमरीकी कृषि विभाग का एक अध्ययन खुद मानता है कि जीएम मक्का और सोयाबीन की पैदावार पारम्परिक किस्मों की तुलना में कम हुई है।

भारत में कपास पर शोध करनेवाले संस्थान द सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ कॉटन रिसर्च, नागपुर के अनुसार वर्ष 2004 से 2011 के बीच देश में कुल कपास उत्पादन में बीटी कॉटन का क्षेत्र 5.4 फीसदी से बढकर 96 फ़ीसदी हो गया, लेकिन पैदावार में कोई खास वृद्धि के संकेत नहीं मिले।

एक शोध के मुताबिक 1996 से 2011 के बीच अमरीका के खेतों में 1890 लाख लीटर कीटनाशकों का प्रयोग किया गया। वर्ष 2012 में ही जीएम खेती करनेवाले किसानों ने औसतन 20 फ़ीसदी अधिक कीटनाशकों का प्रयोग किया। दो दशक पहले अर्जेण्टीना में 340 लाख लीटर रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग होता था जो जीएम सोयाबीन के कारण बढकर 3170 लाख लीटर हो गया है। भारत में 2010 तक 90 फ़ीसदी बीटी कॉटन की खेती होने लगी थी जिसमें 880.4 करोड़ रुपये के कीटनाशकों का इस्तेमाल किया गया।

जीएम फसलों और उसके लिये कीटनाशकों का इतनी भारी मात्रा में बढते प्रयोग ने पर्यावरण को तहस-नहस कर दिया है। दुनिया-भर के अनेक कृषि वैज्ञानिक और पर्यावरणविद इन बीजों के खिलाफ़ हैं। इन बीजों के चलते खेतों को बंजर बना देनेवाले खरपतवार तेज़ी से फैल सकते है। जिनको तमाम रसायनों से भी नष्ट नहीं किया जा सकता। जीएम बीजों का इस्तेमाल करनेवाले देशों में से 28 देश इस संकट से घिर गये हैं। मोन्सेन्टो के जीएम सोयाबीन और कपास की फसल जार्जिया की जमीन को बंजर बना चुकी है।

एक अध्ययन के अनुसार ऐसे खरपतवार तेज़ी से बढ़ रहे हैं जिन्हें खत्म करना बहुत मुश्किल हैं। इन्हें सुपर वीड्स कहा जाता है। अमरीका में लगभग 10 करोड़ एकड़ भूमि इनसे संक्रमित हो चुकी है। कनाडा में 10 लाख एकड़ भूमि में सुपर वीड्स फैल चुकी है। जीएम फसल के चलन के बाद से 21 वीड्स ने प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है। कीटों के मामले में भी यही हो रहा है। भारत में बोलवॉर्म नामक कीड़ा प्रतिरोधी बन रहा है। इन वीड्स और कीटों पर घातक दवाओं का छिड़काव किया जा रहा है, जिसके चलते कई पक्षियों और कीट-पतंगों की प्रजातियां नष्ट हो रही हैं। मानव शरीर के लिए भी इसका असर जानलेवा है।

जैव तकनीक से तैयार ये जीएम बीज परम्परागत देसी बीज़ों को हमेशा-हमेशा के लिए गायब कर देंगी। एक अनुमान के मुताबिक भारत में ही इन बीजों के चलन से देशी बिजों की 2500 किस्में नष्ट हो जायेंगी।

भारत में जब बीटी कॉटन के बुरे नतीजे सामने आ चुके थे और बीटी बैंगन पर विवाद चल रहा था तो दुनिया के 17 प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को इन बीजों के खतरे की जानकारी दी थी। उसमें पर्यावरण के विनाश की ओर भी ध्यान दिलाया गया था। इन बीजों के लिए भारी मात्रा में पानी की जरूरत होती है। हमारे देश में भू-जल स्तर का नीचे जाना पहले से ही विकराल संकट बना हुआ है, जीएम फसलें इस संकट को और बढायेंगी।

बीटी बीजों की सच्चाई को पंजाब और विदर्भ में होनेवाली किसानों की तबाही ने सामने लाकर रख दिया है। यहां किसानों ने अच्छी आमदनी की आस में बीटी कपास के बीज बोये। ये साधारण कपास के बीजों से कई गुणा महंगे हैं। जीएम फसलों को ज़्यादा खाद और पानी की जरूरत होती है। जिससे लागत बढ जाती है। किसानों अपनी जमीनों तक को गिरवी रखकर ऊंची ब्याज दर पर कर्ज लिया और फ़िर उसे खेती में लगाया। लेकिन किसानों के अरमानों पर उस वक्त पानी फिर गया, जब आधे से ज्यादा बीज उगे ही नहीं और जो उगे भी वे कपास पर लगनेवाले ''गुलाबी कीड़ों'' को रोक नहीं पाये। इसके कारण इसने फसल को बहुत नुकसान पहुंचाया। ऐसे में फसल को बचाने के लिये किनानों को बहुत अधिक कीटनाशक का छिड़काव करना पड़ा। इसमें फसल की लागत बढ़ गयी, लेकिन फ़िर भी कपास की फसल कम हुई। इस तरह किसानों को लागत भी वापस नहीं मिल पायी और कर्ज में फ़ंसे किसान बर्बाद हो गये। फसल की बर्बादी तथा सूदखोरों और बैंकों की बदनामी से बचने के लिये कई किसान आत्महत्या करने को विवश हो गये। माननीय मंत्री महोदय को क्या सचमुच इन बातों की जानकारी नहीं है?

-देश विदेश

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. पीपीएच बुक शॉप, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।